Sub:- Gender school + society

Topic- बालिका विद्यालयीकरण

Schooling of Girls

शिक्षा हर मनुष्य के लिये अत्यन्त अनिवार्य घटक है। बिना शिक्षा के मनुष्य को पशु की श्रेणी में रखा जाता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य विनम्रता, उदारता और सहनशीलता जैसे महान गुणों को सीखता है। बालिका शिक्षा का हमारे देश में अत्यन्त महत्व है आज भी हमारे देश में लड़कियों और लड़के में भेदभाव किया जाता है।

स्त्री समाज का आधा हिस्सा है, आधी दुनिया है, सृजन निर्माण है यदि हमें अपने सम्पूर्ण समाज का विकास करना है तो हम आधी दुनिया को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। अतः इस आधी दुनिया यानी महिलाओं को शिक्षित होना अत्यावश्यक है

ब्रिघमयंग के अनुसार :-

"अगर आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप सिर्फ एक पुरुष को शिक्षित करते हैं; लेकिन अगर आप एक स्त्री को शिक्षित करते हैं तो आप एक पूरी पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।" "you educate a man; you educate a man. you educate a woman you educate a generation." — Brigham Young.

बालिका विद्यालयीकरण से तात्पर्य है बालिकाओं की विद्यालयों में पहुंच एवं उपस्थिति दर्ज कराना। बालिका विद्यालयीकरण में बालिकाओं का विद्यालयी कक्षा में नामांकन उनकी उपस्थिति की निरन्तरता बनाये रखने से ही संबंधित किये जा रहे हैं कि किसी भी आधार पर भेदभाव न

Scanned with CamScanner

## बालिका शिक्षा का उद्देश्य :-

बालिका विद्यालयीकरण के उद्देश्य विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न रहे हैं, क्योंकि शिक्षा पर समाज का प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष दोनों ही प्रकार से पड़ता है। अतः विभिन्न कालों में बालिकाओं की शिक्षा के उद्देश्य निम्न रहे हैं :-

प्राचीन काल में :- (1) आचरण की सुदृढ़ता, (2) पवित्र जीवन की तैयारी (3) ज्ञान की प्राप्ति (4) सत्य की खोज (5) सुयोग्य सन्तानों हेतु।

मध्यकाल में :- (1) इस्लाम की शिक्षाओं को जानना (2) इस्लाम धर्म का समुचित पालन करने की सीख (3) जीवन के कर्त्तव्यों का निर्वहन

आधुनिक काल :- (1) नौकरी प्राप्ति हेतु (2) आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा स्वावलम्बन (3) लोकतंत्रीय आदर्शों की पूर्ति हेतु (4) राष्ट्रीय विकास हेतु (5) सभ्य समाज के निर्माण के लिये (6) स्त्रियों के अस्तित्व तथा आत्म सम्मान हेतु (7) सुयोग्य नागरिकों तथा भावी पीढ़ी के निर्माण (8) सर्वांगीण विकास हेतु

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन काली स्त्री शिक्षा में स्त्रियों की शिक्षा, उनकी आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों ही प्रकार की उन्नति करती है, परन्तु मध्यकाल में आते स्त्रियों की पारिवारिक तथा सामाजिक दोनों ही स्थलों पर कमजोर हो गयी। आधुनिक काल में पुनः राष्ट्रीय विकास व व्यक्तित्व विकास में शिक्षा के द्वारा अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने लगी है।

बालिका शिक्षा की महत्व तथा आवश्यकता :-

स्त्री शिक्षा के विषय में महात्मा गाँधी का कथन उदाहरण: सत्य प्रतीत होता है कि जब एक स्त्री शिक्षित होती है तो उसका पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है, जबकि एक पुरुष शिक्षित होता है तो वह स्वयं ही शिक्षित होता है। माता को बच्चे की प्रथम शिक्षिका माना जाता है। इस प्रकार बालिका शिक्षा अर्थात् बालिका विद्यालयीकरण की आवश्यकता और महत्व का क्षेत्र अति व्यापक है, जो निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट है :—

(i) पारिवारिक उन्नति हेतु
(ii) योग्य संतान हेतु
(iii) आर्थिक स्वावलम्बन हेतु
(iv) राष्ट्रीय उन्नति एवं एकता हेतु
(v) सभ्य समाज की स्थापना हेतु
(vi) सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति हेतु
(vii) संवैधानिक प्रावधानों की रक्षा हेतु
(viii) जागरूकता हेतु

पारिवारिक उन्नति हेतु :-

पारिवारिक उन्नति में स्त्रियों का योगदान पुरुषों की अपेक्षा अधिक होता है, क्योंकि पारिवारिक सुख शांति की नींव उन्हीं के कर-कमलों द्वारा रखी जाती है। पढ़ी-लिखी बालिका जब पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करेगी तो उसकी समझदारी से पारिवारिक सदस्यों में प्रेम, सहयोग इत्यादि सकारात्मक भावनाओं का विकास होगा, जिससे पारिवारिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा।

Scanned with CamScanner

योग्य संतान हेतु :- बालिका विद्यालयीकरण इस हेतु भी महत्वपूर्ण और आवश्यक है कि गर्भ में नौ मास तक संतान को वही रखती है उसके विचारों का अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। जन्म के पश्चात भी प्रारंभ के कुछ वर्षों में संतान सर्वाधिक माता के सानिध्य में रहता है, इसीलिए परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला तथा माता को प्रथम शिक्षिका कहा जाता है। शिक्षित बालिकाओं द्वारा भविष्य में सुयोग्य तथा कर्तव्यनिष्ठ संतानों को जन्म दिया जायेगा।

आर्थिक स्वावलम्बन हेतु :- बालिकाओं में शिक्षा के प्रसार द्वारा उनके आर्थिक स्वावलम्बन की नींव डाली जाती है। बालिकाओं को लिंगीय असमानता का शिकार होना पड़ता है। जिसे दूर करने हेतु उनके आर्थिक स्वावलम्बन पर बल दिया जा रहा है और यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है।

राष्ट्रीय एकता एवं उन्नति हेतु :- राष्ट्रीय एकता और उन्नति में स्त्रियों की भूमिका सराहनीय रही है। बालिकाओं के विद्यालयीकरण के द्वारा उन्हें जनसंख्या, पर्यावरण, राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्व अन्तर्राष्ट्रीयता की आवश्यकता इत्यादि से परिचय प्राप्त कराया जाता है और वे अपने जीवन में शिक्षा का प्रयोग करके राष्ट्रीय एकता और उन्नति में सहयोग प्रदान करती है।

Scanned with CamScanner